

# दानियेल की पुस्तक - क्रमांक एक सौ बत्तीस

दूसरी परीक्षा के भविष्यवाणी-संबंधी महत्व का अनावरण: पशु की प्रतिमा तथा 1,44,000 के मुद्रांकन के समय की समझ

Jeff Pippenger

2024-03-12

पिछले लेखों में हमने तीन स्वर्गदूतों द्वारा दर्शाई गई तीन परीक्षाओं में दूसरी परीक्षा की भविष्यसूचक विशेषताओं की पहचान करने में समय लगाया। प्रत्येक स्वर्गदूत एक विशिष्ट परीक्षा का प्रतिनिधित्व करता है, और दूसरी परीक्षा को एक दृश्य परीक्षा के रूप में दर्शाया गया है। हमने तीनों स्वर्गदूतों की पहचान की, और उनकी-उनकी परीक्षाएँ दानियेल के पहले अध्याय में भी पहचानी जाती हैं, जहाँ तीन परीक्षाओं में से दूसरी परीक्षा का आधार दानियेल और तीन वीरों की दिखावट थी, जब उन्होंने बाबिलोनी आहार के स्थान पर शाकाहारी आहार लिया था। दूसरी परीक्षा की एक और विशेषता यह है कि इसे अक्सर कलीसिया और राज्य के संयोजन के चित्रण द्वारा दर्शाया जाता है।

उत्पत्ति अध्याय ग्यारह में निम्रोद के बाबेल के पतन में तीनों स्वर्गदूतों और उनकी-अपनी परीक्षाओं की पहचान होती है। वहाँ ये तीनों परीक्षाएँ 'go to' अभिव्यक्ति के तीन बार प्रयोग द्वारा दर्शाई गई हैं, जो पद 3, 4 और 7 में प्रयुक्त हुई है। पद 4 में 'go to' की दूसरी अभिव्यक्ति दूसरे स्वर्गदूत की परीक्षा को चिह्नित करती है।

और उन्होंने कहा, आओ, हम अपने लिए एक नगर और एक मीनार बनाएं, जिसका शिखर आकाश तक पहुँचे; और हम अपने लिए नाम करें, कहीं ऐसा न हो कि हम सारी पृथ्वी पर तितर-बितर हो जाएँ। उत्पत्ति 11:4.

एक नगर एक राज्य का प्रतिनिधित्व करता है, और एक मीनार एक कलीसिया का प्रतिनिधित्व करती है। उन्होंने एक विशिष्ट चरित्र की भी इच्छा की, जैसा कि अपने लिए नाम बनाने की उनकी इच्छा में दर्शाया गया है। दूसरी परीक्षा में चरित्र प्रायः प्रकट होता है, और यह विपरीत चरित्र के साथ तुलना में होता है, जैसा कि कैन और हाबिल, बुद्धिमान और मूर्ख कुँवारियाँ, या दानियेल की दूसरी परीक्षा में—बाबिल का आहार खाने वालों और दाल-सब्जियाँ खाने वालों की दिखावट के बीच के अंतर—द्वारा दर्शाया गया है।

मैं तुझ से विनती करता हूँ, अपने दासों की दस दिन तक परीक्षा कर; और हमें खाने को दालें और पीने को पानी दिया जाए। तब तेरे सामने हमारे चेहरे और उन युवकों के चेहरे, जो राजा के भोजन का भाग खाते हैं, देखे जाएँ; और जैसा तू देखे, वैसा ही अपने दासों से व्यवहार करना। तब उसने इस बात में उनकी बात मान ली और उन्हें दस दिन तक परखा। और दस दिनों के अंत में उनके चेहरे राजा के भोजन का भाग खाने वाले सब युवकों से अधिक खिले हुए और देह में अधिक स्वस्थ दिखे। दानियेल 2:12-15.

मिलरवादी इतिहास में, दूसरे स्वर्गदूत की परीक्षा ने उपासकों के दो वर्गों को प्रकट किया। जो वर्ग उस परीक्षा में असफल हुआ वह रोम की पुत्रियाँ बन गया; दूसरा वर्ग वे विश्वासयोग्य थे जो बढ़ती हुई ज्योति का अनुसरण करते रहे। रोम की पुत्रियाँ अपनी माता के भविष्यसूचक स्वरूप को प्रतिबिंबित करती हैं, और जिसकी वे पुत्रियाँ बनीं, उस माता की पहचान 'व्यभिचारिणियों की माता' के रूप में की गई है। भविष्यवाणी की भाषा में 'व्यभिचारिणी' उस कलीसिया को कहा जाता है जो राज्य के साथ संबंध में प्रवेश करती है; यही पोपतंत्र की प्रतिमा है।

प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह के तीन स्वर्गदूतों में से पहला, तीनों स्वर्गदूतों में से प्रत्येक की तीनों परीक्षाओं को अपने भीतर समेटे हुए है; यही बात दानियेल अध्याय एक के बारे में भी सत्य है। दानियेल अध्याय बारह में भी तीन-चरणीय परीक्षण प्रक्रिया पहचानी जाती है, इसलिए दानियेल की पुस्तक के आरंभ और अंत, दोनों में ही यह तीन-चरणीय परीक्षण प्रक्रिया विद्यमान है।

बहुत-से लोग शुद्ध किए जाएंगे, और उजले किए जाएंगे, और परखे जाएंगे; परन्तु दुष्ट दुष्टता ही करते रहेंगे; और दुष्टों में से कोई भी न समझेगा; परन्तु बुद्धिमान समझेंगे। दानिय्येल 12:10.

बारहवें पद में पहली परीक्षा शुद्ध किया जाना है, जो पवित्रस्थान के आँगन में होती है जहाँ मेम्ना वध किया जाता है और पापी के खाते में धर्मी ठहराया जाना गिना जाता है। बारहवें पद में दूसरी परीक्षा धवल किए जाना है, जिसका प्रतिनिधित्व पवित्रस्थान के पवित्र स्थान द्वारा होता है, जो उस समय को दर्शाता है जब पवित्रीकरण विश्वासी को प्रदान किया जाता है। तीसरा चरण परखे जाना है, जो महापवित्र स्थान के न्याय का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ परमेश्वर की प्रजा पर मुहर लगाई जाती है और महिमाकरण सम्पन्न होता है। उपासकों के दो वर्ग दुष्टों द्वारा, जो नहीं समझते, और बुद्धिमानों द्वारा, जो समझते हैं, प्रदर्शित किए गए हैं।

दूसरी परीक्षा, जिसका वर्णन पवित्र वचन में अनेक बार किया गया है, एक दृश्य परीक्षा का प्रतिनिधित्व करती है, जहाँ उपासकों के दो वर्ग प्रकट होते हैं, और कलीसिया तथा राज्य का संयोजन प्रतीकित होता है। उतना ही महत्वपूर्ण यह तथ्य है कि दूसरी परीक्षा की एक विशेषता यह है कि वह तीसरी परीक्षा से पहले आती है, और तीसरी परीक्षा न्याय का प्रतिनिधित्व करती है। हालाँकि, तीसरी परीक्षा के न्याय के संबंध में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि तीनों परीक्षाएँ न्याय को शामिल करती हैं, पर पहली दो परीक्षाएँ ऐसी ऐतिहासिक परिस्थिति में घटित होती हैं जहाँ चरित्र-विकास अभी भी संभव होता है। तीसरी परीक्षा भिन्न है, क्योंकि वह भविष्यवाणी की कसौटी है, जो केवल यह पहचानती है कि परीक्षा-प्रक्रिया के पिछले दो चरणों में आप किस वर्ग के उपासक बन चुके थे।

एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी का समय, जो 11 सितंबर, 2001 को शुरू हुआ और संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार के कानून के समय समाप्त होता है, उसमें तीन परीक्षाएँ हैं। पहली परीक्षा तब थी जब 11 सितंबर, 2001 को स्वर्गदूत उतरा, और मिलेराइट इतिहास में 11 अगस्त, 1840 को उतरे स्वर्गदूत के अनुरूप, तो वह आहार की परीक्षा थी। दानिय्येल अध्याय 1 में, पहली परीक्षा तब थी जब दानिय्येल ने अपने मन में ठान लिया कि वह राजा का भोजन नहीं खाएगा। जब मसीह के बपतिस्मा के समय पवित्र आत्मा उतरा और उसके बाद उन्होंने चालीस दिन उपवास किया, तब उनकी पहली परीक्षा आहार की थी।

एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी के समय की तीसरी और अंतिम परीक्षा रविवार का कानून है। उस समय जो सभी लोग सातवें दिन के सब्त के दावों की समझ रखते हैं, और जो सूर्य के दिन आराधना करना चुनते हैं, वे पशु का चिन्ह प्राप्त करेंगे, और वे अनंतकाल के लिए खो जाएंगे। तीन वर्ष बाद, दानिय्येल अध्याय एक में, दानिय्येल और तीन वीरों को नबूकदनेस्सर (रविवार के कानून का एक प्रतीक) के सामने पिछले तीन वर्षों के उनके प्रशिक्षण पर परखे जाने के लिए प्रस्तुत किए गए। जब निम्रोद की बगावत की कहानी में पिता और पुत्र तीसरे "चलो" पर नीचे उतरे थे, तो वह उनकी भाषा को उलझाने और उन्हें चारों ओर तितर-बितर करने के लिए था। तीसरी परीक्षा वह कसौटी है जो दो वर्गों को अनंतकाल के लिए अलग कर देती है।

खरपतवार के दृष्टान्त और जाल के दृष्टान्त दोनों स्पष्ट रूप से सिखाते हैं कि ऐसा कोई समय नहीं जब सभी दुष्ट लोग परमेश्वर की ओर लौट आएँगे। कटनी तक गेहूँ और खरपतवार साथ-साथ उगते रहते हैं। अच्छी और बुरी मछलियाँ अंतिम छँटाई के लिए एक साथ किनारे पर खींच ली जाती हैं।

"फिर, ये दृष्टान्त सिखाते हैं कि न्याय के बाद अनुग्रह-अवधि नहीं होगी। जब सुसमाचार का कार्य पूरा हो जाता है, तब तत्क्षण ही भले और बुरे के बीच पृथक्करण होता है, और प्रत्येक वर्ग का भाग्य सदा के लिए निश्चित हो जाता है।" Christ's Object Lessons, 123.

एक लाख चवालीस हज़ार की मोहरबंदी का समय शीघ्र आने वाले रविवार के कानून पर आकर समाप्त हो जाता है, और उस तीसरी परीक्षा और 11 सितंबर 2001 को आई पहली परीक्षा के बीच, दूसरी परीक्षा लाओदिकियाई एडवेंटिज़्म पर लागू की जाती है। "न्याय के बाद कोई अनुग्रह काल नहीं," क्योंकि तब एक लाख चवालीस हज़ार के लिए सुसमाचार का कार्य पूरा हो चुका होता है।

सिस्टर व्हाइट कई स्थानों पर सिखाती हैं कि यदि हम पहली परीक्षा उत्तीर्ण नहीं करते, तो हम दूसरी परीक्षा उत्तीर्ण नहीं कर सकते, और दूसरी परीक्षा को सफलतापूर्वक उत्तीर्ण किए बिना हम तीसरी, लिटमस परीक्षा में अपनी असफलता प्रकट करेंगे।

मेरा ध्यान मसीह के प्रथम आगमन की घोषणा की ओर फिर से दिलाया गया। यूहन्ना को एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में यीशु का मार्ग तैयार करने के लिए भेजा गया था। यूहन्ना की गवाही को अस्वीकार करने वालों को यीशु की शिक्षाओं से कोई लाभ नहीं हुआ। उसके आने की भविष्यसूचना देने वाले संदेश के प्रति उनके विरोध ने उन्हें ऐसी स्थिति में ला दिया जहाँ वे यह कि वह मसीहा है, इस बात के सबसे सशक्त प्रमाणों को भी आसानी से ग्रहण नहीं कर सके। शैतान ने यूहन्ना के संदेश को अस्वीकार करने वालों को और आगे बढ़ाया कि वे मसीह को भी अस्वीकार करें और उसे क्रूस पर चढ़ाएँ। ऐसा करके उन्होंने अपने आप को ऐसी दशा में डाल लिया जहाँ वे पिन्तेकुस्त के दिन मिलने वाली उस आशीष को प्राप्त न कर सके, जो उन्हें स्वर्गीय पवित्रस्थान में प्रवेश का मार्ग सिखाती। मन्दिर का परदा फट जाना यह दिखाता था कि यहूदी बलिदान और नियम-विधियाँ अब स्वीकार नहीं किए जाएँगे। महान बलिदान चढ़ाया जा चुका था और स्वीकार भी कर लिया गया था, और पवित्र आत्मा, जो पिन्तेकुस्त के दिन उतरा, शिष्यों के मनो को पृथ्वीस्थ पवित्रस्थान से स्वर्गीय पवित्रस्थान की ओर ले गया, जहाँ यीशु अपने ही लहू के द्वारा प्रवेश कर चुका था, ताकि अपने शिष्यों पर अपने प्रायश्चित्त के लाभ उंडेल दे। परन्तु यहूदी पूर्ण अंधकार में छोड़ दिए गए। उद्धार की योजना के विषय में जो प्रकाश उन्हें मिल सकता था, वह सब उन्होंने खो दिया, और फिर भी वे अपने निरर्थक बलिदानों और भेंटों पर भरोसा करते रहे। स्वर्गीय पवित्रस्थान ने पृथ्वीस्थ की जगह ले ली थी, फिर भी उन्हें इस परिवर्तन का ज्ञान न था। अतः वे पवित्र स्थान में मसीह की मध्यस्थता से लाभान्वित नहीं हो सके।

बहुत से लोग इस भय के साथ यहूदियों के मार्ग को देखते हैं कि उन्होंने मसीह को अस्वीकार किया और क्रूस पर चढ़ाया; और जब वे उसके लज्जाजनक दुर्व्यवहार का इतिहास पढ़ते हैं, तो वे सोचते हैं कि वे उससे प्रेम करते हैं, और न तो पतरस की तरह उसे नकारते और न ही यहूदियों की तरह उसे क्रूस पर चढ़ाते। परन्तु परमेश्वर, जो सबके हृदयों को पढ़ता है, ने उस प्रेम की परीक्षा ली जो वे यीशु के प्रति अनुभव करने का दावा करते थे। समस्त स्वर्ग ने पहले स्वर्गदूत के संदेश के स्वीकार किए जाने को अत्यन्त गहन रुचि से देखा। परन्तु बहुतों ने, जो यीशु से प्रेम करने का दावा करते थे और जो क्रूस की कहानी पढ़ते समय आँसू बहाते थे, उसके आगमन के शुभ समाचार का उपहास किया। संदेश को आनन्द के साथ ग्रहण करने के बजाय उन्होंने उसे भ्रम घोषित किया। उन्होंने उन लोगों से घृणा की जो उसके प्रगटन से प्रेम करते थे और उन्हें कलीसियाओं से बाहर कर दिया। जिन्होंने पहले संदेश को अस्वीकार किया, वे दूसरे से लाभान्वित नहीं हो सके; और न ही वे आधी रात की पुकार से लाभान्वित हुए, जो उन्हें विश्वास के द्वारा यीशु के साथ स्वर्गीय पवित्रस्थान के अत्यन्त पवित्र स्थान में प्रवेश करने के लिए तैयार करने वाली थी। और पहले दो संदेशों को अस्वीकार करके उन्होंने अपनी समझ को इतना अन्धकारमय कर दिया है कि वे तीसरे स्वर्गदूत के संदेश में कोई प्रकाश नहीं देख सकते, जो अत्यन्त पवित्र स्थान में जाने का मार्ग दिखाता है। मैंने देखा कि जैसे यहूदियों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया, वैसे ही नामधारी कलीसियाओं ने इन संदेशों को क्रूस पर चढ़ा दिया है; इसलिए उन्हें अत्यन्त पवित्र स्थान में जाने के मार्ग का कोई ज्ञान नहीं है, और वे वहाँ यीशु की मध्यस्थता से लाभान्वित नहीं हो सकते। यहूदियों के समान, जो अपने निष्फल बलिदान चढ़ाते थे, वे उस कक्ष की ओर अपनी निष्फल प्रार्थनाएँ चढ़ाते हैं जिसे यीशु छोड़ चुका है; और शैतान, इस धोखे से प्रसन्न होकर, धार्मिक रूप धारण करता है, और इन कथित मसीहियों के मनो को अपनी ओर ले जाता है, अपनी शक्ति, अपने चिन्हों और झूठे चमत्कारों के साथ काम करते हुए, ताकि उन्हें अपने फन्दे में जकड़ दे। प्रारम्भिक लेखन, 259-261.

यदि हम 11 सितंबर, 2001 द्वारा दर्शाया गया चेतावनी संदेश स्वीकार नहीं करते, तो जब रविवार का कानून आएगा, हम उसे अवश्य स्वीकार करेंगे—यह मानते हुए कि तब तक हम जीवित होंगे। यह कहते हुए, वह परीक्षा जिसमें हमारी अनन्त नियति निर्धारित होती है, और वह परीक्षा जिसे हमें रविवार के कानून के समय हम पर मुहर लगने से पहले पास करना है—जो कि अनुग्रहकाल के बंद होने से पहले पास की जाने वाली परीक्षा है—वही दूसरी परीक्षा है, और वह पशु की प्रतिमा की परीक्षा है।

“प्रभु ने मुझे स्पष्ट रूप से दिखाया है कि पशु की प्रतिमा अनुग्रह-अवधि समाप्त होने से पहले बनाई जाएगी; क्योंकि वह परमेश्वर की प्रजा के लिए महान परीक्षा होगी, जिसके द्वारा उनका अनन्त भाग्य निर्धारित किया जाएगा। तुम्हारी स्थिति ऐसी असंगतियों का उलझा हुआ मिश्रण है कि बहुत थोड़े ही लोग धोखा खाएँगे।

“प्रकाशितवाक्य 13 में यह विषय स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है; [प्रकाशितवाक्य 13:11-17, उद्धृत]।

“यह वह परीक्षा है जिससे परमेश्वर की प्रजा को मुहरबंद किए जाने से पहले अवश्य गुजरना होगा। जो सब लोग उसकी व्यवस्था का पालन करके, और एक मिथ्या सब्त को स्वीकार करने से इंकार करके, परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा सिद्ध करेंगे, वे प्रभु परमेश्वर यहोवा के ध्वज के अधीन गिने जाएँगे, और जीवते परमेश्वर की मुहर प्राप्त करेंगे। जो लोग स्वर्गीय मूल के सत्य का परित्याग करके रविवार-सब्त को स्वीकार करेंगे, वे पशु की छाप प्राप्त करेंगे।” Manuscript Releases, volume 15, 15.

एक लाख चत्वारिस हज़ार की मुहरबंदी के समय की दूसरी परीक्षा एक भविष्यसूचक दृश्य परीक्षा है। इसमें संयुक्त राज्य अमेरिका में पशु की प्रतिमा के गठन की पहचान आवश्यक है, और वह परीक्षा केवल परमेश्वर के भविष्यसूचक वचन के माध्यम से ही प्रकट की जा सकती है। और उससे भी बढ़कर, परमेश्वर का भविष्यसूचक वचन केवल वही समझेंगे जो ‘अंतिम वर्षा’ के संदेश को खाने का चयन करते हैं, जिसे ‘पंक्ति पर पंक्ति’ की पद्धति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यदि हम प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के शक्तिशाली स्वर्गदूत के हाथ में जो संदेश है, उसे उसके उतरने पर खाने से इनकार करते हैं, तो हम पशु की प्रतिमा के गठन को पहचानने की क्षमता नहीं रखेंगे।

स्वर्गदूत के हाथ में जो संदेश है उसे खाने के लिए यह आवश्यक है कि भविष्यद्वानी का विद्यार्थी यह देख सके कि स्वर्गदूत के हाथ में एक संदेश है। जब प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह का पराक्रमी स्वर्गदूत उतरता है, तो आयत उसके हाथ में किसी भी वस्तु का उल्लेख नहीं करती, परंतु पंक्ति पर पंक्ति की पद्धति अनेक साक्षियों के आधार पर यह स्थापित करती है कि जो स्वर्गदूत उतरते हैं उनके हाथ में सदा एक संदेश होता है। जो लोग पंक्ति पर पंक्ति की पद्धति को अस्वीकार करते हैं, वे उस संदेश के प्रति अंधे हैं जो यह प्रमाण प्रदान करता है कि पशु की मूर्ति संयुक्त राज्य अमेरिका में बन रही है। इसे अवश्य पहचानना जाना चाहिए, क्योंकि हमारी अनन्त नियति इस सत्य को पहचानने पर आधारित है। पंक्ति पर पंक्ति के आधार पर, सिस्टर वाइट प्रथम स्वर्गदूत के भविष्यद्वानी संबंधी लक्षणों को प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के पराक्रमी स्वर्गदूत के उन्हीं लक्षणों के समान ठहराती हैं।

मुझे वह रुचि दिखाई गई जो समस्त स्वर्ग ने पृथ्वी पर चल रहे कार्य में ली थी। यीशु ने एक शक्तिशाली स्वर्गदूत को उतर आने और पृथ्वी के निवासियों को यह चेतावनी देने का आदेश दिया कि वे उसके दूसरी बार प्रकट होने के लिए तैयार हों। जब स्वर्गदूत स्वर्ग में यीशु की उपस्थिति से निकला, तो एक अत्यंत उज्ज्वल और महिमामय प्रकाश उसके आगे-आगे चला। मुझे बताया गया कि उसका कार्य अपनी महिमा से पृथ्वी को प्रकाशमान करना और मनुष्य को आने वाले परमेश्वर के क्रोध के बारे में चेतावनी देना था। असंख्य लोगों ने उस प्रकाश को स्वीकार किया। इनमें से कुछ अत्यंत गंभीर प्रतीत होते थे, जबकि अन्य आनंदित और आत्मविभोर थे। जिन-जिन ने उस प्रकाश को स्वीकार किया, उन्होंने अपने मुख स्वर्ग की ओर मोड़े और परमेश्वर की महिमा की। यद्यपि वह सब पर उंडेला गया था, फिर भी कुछ लोग केवल उसके प्रभाव के अधीन तो आ गए, पर उसे पूरे मन से स्वीकार नहीं किया। बहुत से बड़े क्रोध से भर गए। उपदेशक और लोग दुष्टों के साथ मिल गए और शक्तिशाली स्वर्गदूत द्वारा बिखरे गए प्रकाश का दृढ़ता से विरोध किया। परन्तु जिन्होंने उसे स्वीकार किया, वे संसार से अलग हो गए और आपस में घनिष्ठ रूप से एकजुट हो गए।

“शैतान और उसके स्वर्गदूत जितने संभव हो उतने लोगों के मनों को प्रकाश से भटकाकर दूर ले जाने के प्रयास में बड़ी तन्मयता से लगे हुए थे। जिन्होंने उसे अस्वीकार किया, वे अंधकार में छोड़ दिए गए। मैंने देखा कि परमेश्वर का स्वर्गदूत अत्यंत गहरी रुचि के साथ परमेश्वर के कहलाने वाले लोगों को देख रहा था, ताकि जब उन्हें स्वर्गीय मूल का संदेश प्रस्तुत किया गया, तब वे जो चरित्र प्रकट करते थे, उसका विवरण वह दर्ज करे। और जब बहुत से लोग, जो यीशु के प्रति प्रेम का दावा करते थे, उस स्वर्गीय संदेश से तिरस्कार, उपहास और घृणा के साथ मुड़ गए, तो हाथ में चर्मपत्र लिए एक स्वर्गदूत ने वह लज्जाजनक अभिलेख दर्ज किया। सम्पूर्ण स्वर्ग इस बात से आक्रोश

से भर गया कि यीशु के कहलाने वाले अनुयायी उन्हें इस प्रकार तुच्छ ठहराएँ।" Early Writings, 245, 246.

इस खंड में, प्रकाशितवाक्य के अध्याय चौदह का पहला स्वर्गदूत "नियुक्त" किया गया था "उतरने और पृथ्वी के निवासियों को उसके दूसरे आगमन के लिए तैयार होने की चेतावनी देने के लिए", जो प्रकाशितवाक्य के अध्याय अठारह के स्वर्गदूत का भी ठीक वही कार्य है। पहले स्वर्गदूत का कार्य यह था "अपनी महिमा से पृथ्वी को आलोकित करना और मनुष्य को परमेश्वर के आने वाले कोप के विषय में चेतावनी देना," जो एक बार फिर अध्याय अठारह के स्वर्गदूत का भी मिशन है। जिन्होंने संदेश को स्वीकार किया, उन्होंने "परमेश्वर की महिमा की," और जिन्होंने संदेश को अस्वीकार किया, वे "पूर्ण अंधकार में छोड़ दिए गए।"

दानिएल और तीन प्रतिष्ठित जनों ने स्वर्गीय आहार खाना चुना, और दूसरे समूह ने बाबेल का आहार खाया। दस दिनों की "दृष्टि-परीक्षा" के अंत में, दानिएल और उसके साथियों ने परमेश्वर की महिमा की, क्योंकि उनके मुख-मंडल देखने में बाबेल का आहार खाने वालों की अपेक्षा अधिक भरे-पूरे और सुन्दर थे। प्रकाशितवाक्य के चौदहवें अध्याय में पहले स्वर्गदूत का संदेश, अनन्त सुसमाचार की अपनी पहचान में तीनों परीक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है। पहली परीक्षा है परमेश्वर का भय मानना, दूसरी है उसे महिमा देना, और तीसरी परीक्षा है जब न्याय की घड़ी आ पहुँचती है। जिन्होंने पहले स्वर्गदूत के हाथ से छोटी पुस्तक ली और उसे खा लिया, जैसा कि अध्याय दस में यूहन्ना द्वारा दर्शाया गया है, उन्होंने दूसरी परीक्षा में परमेश्वर की महिमा की, और तब वे नबूकदनेस्सर के न्याय में प्रवेश करने के लिए तैयार थे। पंक्ति पर पंक्ति, 11 सितंबर, 2001 को पहली परीक्षा यह थी कि उस शक्तिशाली स्वर्गदूत के हाथ में जो छोटी पुस्तक थी, उसे खाया जाए। उस परीक्षा ने अगली परीक्षा का परिचय कराया, जहाँ उपासकों के दो वर्ग तीसरी और अंतिम कसौटी से पहले प्रकट होने थे, जो बस यह दिखाती थी कि या तो चरित्र महिमामय है, या अंधकार से भरा हुआ।

एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी का समय 11 सितंबर 2001 से लेकर संयुक्त राज्य अमेरिका में शीघ्र आने वाले रविवार कानून तक का इतिहास है। उस इतिहास में दस कुँवारियों का दृष्टांत अक्षरशः दोहराया जाएगा और अक्षरशः पूरा होगा। यह तथ्य तब यह दर्शाता है कि हबक्कुक अध्याय 2 का भविष्यसूचक इतिहास भी अक्षरशः दोहराया जाएगा और अक्षरशः पूरा होगा। इसका यह भी अर्थ है कि एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी की अवधि वही अवधि है जब प्रत्येक भविष्यसूचक दर्शन का प्रभाव दोहराया जाता है और अक्षरशः पूरा होता है।

दानियेल अध्याय ग्यारह, पद चालीस पर लगी मुहर 1989 में अन्त के समय पर खोली गई। यह पद 1798 के अन्त के समय से आरम्भ होता है और 1989 के अन्त के समय को चिन्हित करते हुए समाप्त होता है। रेखा पर रेखा, 1798 का अन्त का समय 1989 के अन्त के समय के साथ मेल खाता है। पद चालीस का इतिहास, जो 1798 से आरम्भ होकर पद इकतालीस में रविवार कानून तक जाता है, पृथ्वी के पशु (संयुक्त राज्य अमेरिका) के इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है, जो बाइबल की भविष्यवाणी का छठा राज्य है। पृथ्वी के पशु के गणतंत्रवाद और प्रोटेस्टेंटवाद के दो सींग उन दो 'अन्त के समयों' के द्वारा दर्शाए गए हैं।

एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी के समय, उस समयावधि के भीतर होने वाली तीन परीक्षाओं में से दूसरी परीक्षा के दौरान, प्रोटेस्टेंट सींग उपासकों के दो वर्ग उत्पन्न करेगा। एक वर्ग मसीह की छवि विकसित कर ली होगी, और दूसरा वर्ग पशु की छवि विकसित कर ली होगी। उस परीक्षण काल में, रिपब्लिकन सींग धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंट सींग के साथ मिल जाएगा और, जब प्रोटेस्टेंट कलीसियाएँ नागरिक सरकार पर नियंत्रण कर लेंगी, तब पशु की छवि बनाएगा। उस समयावधि का निरूपण परमेश्वर के वचन के हर दर्शन में किया गया है, क्योंकि यहीं 'बाइबल की पुस्तकें मिलती और समाप्त होती हैं'।

उस इतिहास में दूसरी परीक्षा पशु की प्रतिमा की परीक्षा है, जो आंतरिक रूप से कुँवारियों के लिए और बाह्य रूप से दो प्रतिद्वंद्वी राजनीतिक दलों के राजनीतिज्ञों के लिए है। वही परीक्षा वह परीक्षा है जिसे हमें शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय, "अनुग्रह का समय बंद होने से पहले", उत्तीर्ण करना होगा। वही परीक्षा वह परीक्षा है जिसे हम "हम पर मुहर लगने से पहले" उत्तीर्ण करते हैं। वही परीक्षा वह परीक्षा है जहाँ "हमारी शाश्वत नियति का निर्णय किया

जाएगा"।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

एक और शक्तिशाली स्वर्गदूत को पृथ्वी पर उतरने के लिए नियुक्त किया गया। यीशु ने उसके हाथ में एक लिखित संदेश रखा, और जैसे ही वह पृथ्वी पर आया, उसने पुकारा, "बाबेल गिर पड़ा, गिर पड़ा।" तब मैंने देखा कि निराश लोगों ने फिर से स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं, और विश्वास और आशा के साथ अपने प्रभु के प्रकट होने की राह देखने लगे। परन्तु बहुत से लोग मानो सोए हुए हों, एक जड़-सी अवस्था में प्रतीत हो रहे थे; तथापि उनके चेहरों पर गहरे शोक की छाप दिखाई दे रही थी। निराश लोगों ने शास्त्रों से समझा कि वे विलंब के समय में हैं, और उन्हें दर्शन की पूर्ति के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी चाहिए। वही प्रमाण जिसने उन्हें 1843 में अपने प्रभु की प्रतीक्षा करने के लिए प्रेरित किया था, ने उन्हें 1844 में भी उसकी अपेक्षा करने के लिए प्रेरित किया। फिर भी मैंने देखा कि अधिकांश के पास वह ऊर्जा नहीं रही जो 1843 में उनके विश्वास की पहचान थी। उनकी निराशा ने उनके विश्वास को मद्धम कर दिया था. ..

जब पवित्र स्थान में यीशु का सेवाकार्य समाप्त हुआ, और वह महापवित्र स्थान में प्रवेश कर गया, तथा उस वाचा के सन्दूक के सामने खड़ा हुआ जिसमें परमेश्वर की व्यवस्था थी, तब उसने संसार के लिए तीसरा संदेश लेकर एक और शक्तिशाली दूत को भेजा। दूत के हाथ में एक चर्मपत्र रखा गया, और जब वह सामर्थ और महिमा के साथ पृथ्वी पर उतरा, तो उसने मनुष्य तक कभी पहुँचाई गई सबसे भयानक धमकी के साथ एक भयावह चेतावनी की घोषणा की। यह संदेश परमेश्वर के बच्चों को सावधान करने के लिए था, उन्हें वह परीक्षा और क्लेश की घड़ी दिखाकर जो उनके सामने थी। दूत ने कहा, 'उन्हें पशु और उसकी मूर्ति के साथ निकट संघर्ष में ला दिया जाएगा। अनन्त जीवन की उनकी एकमात्र आशा दृढ़ बने रहना है। यद्यपि उनके प्राण दाँव पर होंगे, तो भी उन्हें सत्य को दृढ़तापूर्वक थामे रहना होगा।' तीसरा दूत अपना संदेश इस प्रकार समाप्त करता है: 'यहाँ पवित्र जनों का धैर्य है; यहाँ वे हैं जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हैं और यीशु के विश्वास को रखते हैं।' जब वह इन शब्दों को दोहरा रहा था, उसने स्वर्गीय पवित्रस्थान की ओर संकेत किया। जो भी इस संदेश को स्वीकार करते हैं, उनका मन महापवित्र स्थान की ओर निर्देशित किया जाता है, जहाँ यीशु सन्दूक के सामने खड़े हैं, उन सभी के लिए अपनी अन्तिम मध्यस्थता कर रहे हैं जिनके लिए दया अब भी ठहरी हुई है, और उनके लिए भी जिन्होंने अज्ञानता में परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया है। यह प्रायश्चित्त धर्मी मृतकों के लिए भी किया जाता है और धर्मी जीवितों के लिए भी। इसमें वे सब सम्मिलित हैं जो मसीह पर भरोसा रखते हुए मरे, परन्तु जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं के विषय में प्रकाश प्राप्त न करके उसकी विधियों का उल्लंघन करते हुए अज्ञानता में पाप किया था। प्रारम्भिक लेखन, 245, 255।